प्रयोगात्मक विधि (मनोविज्ञान)

Date : .....

Expt. No. .....

Experimental Method

Page No. .....1.....

प्रयोगात्मक विधि हम उस विधि को कहेंगे जिसके द्वारा प्रयोग किया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि-प्रयोग किसे कहते हैं ? तो हम कह सकते हैं कि नियंत्रित अवस्था में प्रेक्षण करने को प्रयोग कहा जाता है।

"An experiment is observation under controlled conditions."

मनोविज्ञान के संबंध में हम कह सकते हैं कि नियंत्रित अवस्था में व्यक्ति के अनुभव और व्यवहार का प्रेक्षण करने की विधि प्रयोगात्मक विधि है। मनोवैज्ञानिक प्रयोग में हमारा उद्देश्य यह देखना होता है कि अमुक घटना या कारक का संबंध किसी व्यवहार - विशेष से है अथवा नहीं। इसके लिए यह जरूरी है कि उस घटना के अतिरिक्त अन्य परिस्थितियों तथा घटनाओं को नियंत्रित रखा जाय। इसे नियंत्रित करके जब हम उस घटना के प्रभाव का प्रेक्षण करेंगे तो इसे प्रयोग कहेंगे।

मनोविज्ञान की प्रयोगात्मक विधि में कई उप-विधियों का भी प्रयोग किया जाता है, जिनमें अन्तर्निरीक्षण, बाह्य-निरीक्षण तथा सांख्यिकीय परिगणना का भी प्रयोग किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक प्रयोग के कई आवश्यक अंग होते हैं, जिनमें - (क) प्रयोगकर्त्ता एवं प्रयोज्य (ख) नियंत्रित प्रयोगशाला तथा (घ) यंत्र एवं उपकरण आदि प्रमुख हैं।

चर या परिवर्त्य (Variable) :- जब हम प्रयोग करना प्रारम्भ करते हैं तो कुछ परिवर्त्य या चर होते हैं, जो हमारे प्रयोग के निष्कर्षों या अध्ययन पर असर डालते हैं। परिवर्त्य या चर (Variables) क्या है? तो इस संबंध में हम कह सकते हैं कि - उद्दीपन व्यक्ति या वस्तु

Teacher's Signature : .....
Dr. Gajendra Tiwari
Department of Psychology
Govt. Degree College, Bagaha
M-N- 9693082589

की वह अवस्था अथवा विशेषता है, जिसमें परिवर्तन संभव हो, चर या परिवर्त्य (Variable) कहलाता है। किसी उद्दीपन का प्रयोज्य की किसी क्रिया पर क्या असर पड़ता है, उसी का पता प्रयोग के सहारे लगाया जाता है।

जिस उद्दीपन का असर देखा जाता है उसे स्वतंत्र चर (Indepedent variable) कहते हैं और उसका जो असर व्यक्ति पर होता है, उसे आश्रित या परतंत्र (dependent) चर कहते हैं। जैसे- प्रयोक्ता विषयी के हाथ में पिन चुभाता है, और विषयी हाथ खींच लेता है। इसमें पिन चुभाना स्वतंत्र चर हुआ और विषयी का हाथ खींचना (पिन चुभाने का असर) परतंत्र चर। प्रयोक्ता इस बात का हमेशा ध्यान रखता है कि प्रयोग में प्रायः एक स्वतंत्र चर कार्य करे। इसलिए वह अन्य उद्दीपनों को नियंत्रित रखता है। इन्हें नियंत्रित चर (Controlled Variable) कहते हैं। इस तरह, किसी भी मनोवैज्ञानिक प्रयोग में तीन तरह के चर होते हैं —(1.) स्वतंत्र चर (2) परतंत्र चर (3) नियंत्रित चर।

प्रयोगात्मक विधि के गुण :-

वर्तमान युग को "वैज्ञानिक प्रगति का युग कहा जाता है। विज्ञान के क्षेत्र में आज हो रही प्रगति सही अर्थ में इसी प्रयोग विधि की ऋणी है। इसी विधि के कारण मनोविज्ञान भी आज एक अत्यन्त ही उपयोगी एवं प्रगतिशील विज्ञान के रूप में विकास कर सका है। वस्तुतः प्रयोगात्मक विधि एक विश्वसनीय एवं सभी विषयों में एक श्रेष्ठ विधि मानी जाती है। अतः इस विधि के भी कुछ महत्त्वपूर्ण गुण हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

Teacher's Signature : Gajendra Tiwari